B.A. I Hons (Hindi) के छात्रों के लिए

चित्रलेखा उपन्यास में पात्र नियोजन/पात्रयोजना

डॉ० सविता चन्द्र पाठक
हिन्दी विभाग, एस०एस०एस० कॉ० जहानाबाद

'चित्रलेखा' भगवती चरण वर्मा का बहुचर्चित उपन्यास है जिसमें पाप-पुण्य पर गंभीर विचार किया गया है। सच पूछा जाये तो पात्र ही वह मजबूत स्तंभ है जिसके चारों ओर कथानक का विकास होता है। कथानक आखिर पात्रों का इतिवृत्त होता है। यदि पात्र नहीं तो कथानक का तो स्वतः अभाव हो जायेगा इसीलिए पात्र के अभाव में उपन्यास की परिकल्पना असंभव है।

चित्रलेखा उपन्यास में पात्रों की संख्या अत्यंत सीमित है। चूंकि यह एक विचारप्रधान या उद्देश्यप्रधान उपन्यास है अत: इसमें पात्रों की भीड़ नहीं है बल्कि सीमित पात्रों के माध्यम से विवेच्य विषय पर विचारकर कथानक को चरम परिणति प्रदान की गयी है। स्थूल रूप से पात्रों के दो भेद हो सकते हैं :- (i) पुरुष पात्र (ii) नारी पात्र

पुरुष पात्रों में कृष्णादित्य, महर्षि रत्नांबर, बीजगुप्त, विशालगुप्त श्वेतांक, कुमारगिरि योगी, मृत्युंजय, महामंत्री चाणक्य एवं महाराज चन्द्रगुप्त परिगणित हैं। नारी पात्रों की संख्या तो अत्यंत सीमित है पहली है चित्रलेखा और दूसरी यशोधरा।

पुरुष पात्रों में कृष्णादित्य एवं महाराज चन्द्रगुप्त का उपन्यास में उल्लेख मात्र हुआ है, उनकी कोई सक्रिय भूमिका नहीं दिखलायी पड़ती। अत: हम इन्हें अत्यंत गौण पात्र कह सकते हैं। महामंत्री चाणक्य की उपन्यास में उपस्थिति बहुत छोटी अवधि के लिए होती है किन्तु उनकी उपस्थिति अत्यंत प्रभावशाली है। उधर महर्षि रत्नांबर इस पूरी कथा के सूत्रधार हैं। कथानक का आरंभ उनके आश्रम से होता है और उसका अंत भी

इसी स्थान पर होता है। रत्नाम्बर कथानक के आरंभ में उपस्थित होकर अपने शिष्यों का विनियोग इस प्रकार करते हैं कि उपन्यास का मूल प्रश्न ही स्पष्ट हो जाता है। और अंत भी उनके शिष्यों के अनुभवजन्य परिणाम देखना के पश्चात् ही होता है। स्पष्ट है रत्नाम्बर का इस उपन्यास में वही स्थान है जो किसी पुस्तक की व्याख्या में इसके भूमिका होता है।

विशालदेव और श्वेतांक का नियोजन एक तटस्थ द्रष्टा के रूप में किया गया था किन्तु आगे विशालदेव तो तटस्थ द्रष्टा एवं प्रेक्षक बना रह जाता है किन्तु श्वेतांक उस औपन्यासिक क्रियाशीलन ~~एक~~ का एक सक्रिय पात्र बन जाता है। वह परिस्थितियों के बीच तटस्थ नहीं रह पाता और अपनी सक्रियता से घटनाओं को प्रभावित भी करता है तथा स्वयं भी प्रभावित होता है।

कुमारगिरि और बीजगुप्त इस उपन्यास के प्रधान पात्र हैं जिन्हें केन्द्र में रखकर संपूर्ण कथानक का विकास हुआ है। ये दोनों परस्पर विरोधी या कहें विपरीत ध्रुवों के निवासी हैं। दोनों का चिंतन-दोनों की जीवनशैली, दोनों के जीवन के उद्देश्य परस्पर भिन्न-भिन्न हैं।